'क' से कबूतर

जगदीश सौरभ

बहुत देर तक सोचने पर भी मुझे उसका कोई नाम नहीं समझ आया, इसलिए मैं उसे कबूतर ही कहूँगा। जैसे मैंने अपने नीले रंग के लैपटॉप का नाम नीलोफ़र और सेकेंड हैंड कार का नाम बनमुर्गी रखा था, मैं उसका भी कोई ना नाम रखना चाहता हूँ, लेकिन कुछ सूझ नहीं रहा है इसकी कुछ वजहें हो सकती हैं। लैपटॉप से मुझे बहुत प्रेम था, क्योंकि उसने मेरी ज़िंदगी से जितना समय लिया है, उससे बहुत कुछ ज़्यादा ही दिया है। आठ-दस साल के लंबे समय में वह सुख और दुख का साथी था। कार के नाम की अलग कहानी है। एक बार जब मैं उसे चलाते हुये एक जंगल से गुज़र रहा था तो मुझे सिगरेट पीने की तलब लगी। एक जगह रुक कर सिगरेट पीते हुये मैं कार को गौर से देखने लगा तो जंगल के बिल्कुल गाढ़े-हरे माहौल में दूर खड़ी आसमानी रंग की कार मुझे किसी बनमुर्गी की तरह दिखाई पड़ी। इसलिए मैंने उसका नाम उसी वक्त बनमुर्गी रख दिया। कबूतर से मुझे कोई लगाव नहीं था। शायद यही वजह है कि मुझे उसका कोई नाम नहीं सूझ रहा था।

वह कबूतर मुझे कब दिखना शुरू हुआ, बहुत दावे से नहीं कहा जा सकता। आप सोचेंगे कि इसमें दावा करने वाली वैसे भी कोई बात नहीं है। मेरा भी यही मानना है कि इस बात का कोई मतलब नहीं है कि वह मुझे कब दिखना शुरू हुआ। शायद किसी दिन बरसात के समय अपना सिर छुपाने के लिए छज्जे के ठीक नीचे मेरी खिड़की की ग्रिल पर दुबका हुआ। शायद सामने के फ्लैट की खिड़की के मटमैले छज्जे के ऊपर बैठा ऊँघता हुआ। शायद बालकनी की रॉड पर बैठा अपने पंख खुजाता हुआ या फिर किचन के एग्जॉस्ट फैन की दड़बेनुमा छोटी सी जगह पर सुस्ती में आँखें मलकाता हुआ। यह भी हो सकता है कि पहले वह देखा नहीं सुना गया हो। एक अजीब सी मरियल और उबासी भरी गुटरगूं का उच्चारण करता और अपने पंख फड़फड़ाता हुआ। एक नए शहर में भीड़भाड़ से काफी दूर और एकांत में बनी बिल्डिंग में रहने के कई फ़ायदों के अलावा सबसे बड़ा नुकसान यह था कि यहाँ हर आवाज़ बहुत बारीकी से सुनी जा सकती थी। ऊपर के फ्लैट में रहने वाला अपना फ्लश भी चलाता तो लगता कि एक झटके के साथ सारी गंदगी मेरे सिर पर आ गिरेगी। सिलेन्डर हटाने, चारपाई सरकाने, दरवाज़ा खोलने बंद करने, वाशिंग मशीन के चलने और यहाँ तक कि लिफ्ट किस

फ्लोर से किस फ्लोर तक जा रही है, घर के अंदर बैठे-बैठे इसका भी अनुमान लगाया जा सकता था । ऐसे सुनसान माहौल में, जिससे मुझे बहुत समस्या नहीं थी, यह बेहूदा कबूतर दिन में कई-कई बार अपनी हाज़िरी दर्ज़ करा जाता । मैं मानता हूँ कि बेहूदा शब्द कबूतर के लिए थोड़ा सख्त है, लेकिन आप मेरी रहमदिली पर मर मिटेंगे जब मैं यह कहूँगा कि मेरे पास उस कबूतर के पैर तोड़ देने के बहुत सारे मौके होने पर भी मैंने उसे जाने दिया । बावजूद इसके कि वह मेरे एकांत में कितना दखल पैदा करता है, यह मैं ही जानता हूँ । आप तब मुझे और अच्छा आदमी समझेंगे, जब मैं यह बताऊंगा कि वह कबूतर मुझे तंग करनेके इस काम में कई दफा अपने कुछ और साथियों को भी शामिल करता था ।

मैं उसे खूब पहचानता हूँ । आप सोच रहे होंगे कि किसी कबूतर को व्यक्तिगत रूप से पहचानना कितना फुर्सत का काम हो सकता है । लेकिन यकीन मानिए मेरे पास उतनी फुर्सत बिलकुल भी नहीं थी और इसके बावजूद मैं उसे ठीक से पहचानता था । यह बहुत ही विडंबनापूर्ण बात है । मैं उसे पहचानता हूँ उसकी आँखों के लाल घेरे से, उसकी ऊपर-नीचे होती हुई भद्दी तिरछी गर्दन से और छज्जे पर पालथी जैसा मारकर मेरी खिड़की के अंदर एकटक झाँकने के अंदाज़ से । वैसे कबूतर और भी ढेर सारे हैं दिखने में उससे अच्छे और खराब दोनों तरह के, लेकिन मैं फिर भी इसे पहचानता हूँ । अगर इसे पहचानने के बारे में आखिरी कोई बात कहनी होगी तो मैं यही कहूँगा कि इसको देखते हुये जो चिढ़ मेरी आँखों में पैदा होती है, वही इसकी सबसे पक्की पहचान है ।

इस कबूतर से मुझे चिढ़ क्यों है ? कहीं किसी पक्षी से चिढ़ना बुढ़ापे की निशानी तो नहीं है ? अगर आप यह सोचते हैं तो बिलकुल ग़लत हैं । मैं तो गुरु नानक के मिजाज का आदमी हूँ, जो चिड़ियों को अपना ही खेत चुगने तक उन्हें देखता है, फिर भी हड़ा-हड़ा करके उन्हें भगाता नहीं है । जो घर वालों के कोसने पर इतना भर कहता है कि 'रब दी चिड़िया, रब दा खेत ।' बुढ़ापे की निशानी से मैं इसलिए भी सहमत नहीं हो सकूँगा क्योंकि मैंने अपने बचपन में बुढ़ापे की पर्याप्त मिसालें देखी हैं । मैं बहुत से नजदीकी बुढ़ापों से गुज़र चुका हूँ । मेरे दादा जी एक बूढ़े और बदमिजाज़ किस्म के आदमी रह चुके थे । उन्होने एक अमरूद के पेड़ से ढेर सारे नन्हें बतिए इसलिए गुस्से में तोड़कर फेंक दिये थे कि न रहेगा अमरूद न, न उसकी ताक में रहेंगे मुहल्ले के शरारती बच्चे । शुक्र है उन्होंने पेड़ नहीं काटा । उस वक्त मेरे जेहन में यह सवाल भी आया था कि इतनी ही चिढ़ थी तो पेड़ क्यों नहीं काट दिया ! मैं उनसे सवाल नहीं पूछ सका, क्योंकि मैं इसकी वजह और बेतुका सवाल पूछने का संभावित नतीजा जानता था ।

फिर मैं इस कबूतर से क्यों चिढ़ता हूँ । समस्या यह है कि जब कभी यह मेरी खिड़की के सामने नहीं होता और जैसे ही मैं इस खयाल से खुश होने ही वाला होता हूँ, यह खिड़की के ठीक सामने एक बार ऊपर और एक बार नीचे इस तरह से पंख फड़फड़ाकर कलाबाजियाँ दिखाता जैसे किसी देश की शक्तिशाली वायु सेना कोई शक्ति प्रदर्शन कर रही हो । एक दिन जब मैं बहुत गहराई से जीवन के किसी सवाल में उलझा हुआ अपनी डायरी के कागज काले कर रहा था तो मैंने देखा कि वह कबूतर ठीक मेरी आँखों के सामने उसी छज्जे पर किसी मासूम सी कबूतरी की इज्ज़त के साथ खिलवाड़ कर रहा था । मुझे कबूतरी से सहानुभूति महसूस हुई । मैं कबूतरी से कहना चाहता था कि "बहन ! तुमने बहुत बेहूदा साथी चुना है ।"

एक दिन मैंने चाय की तलब महसूस होने के बाद किचन का दरवाज़ा खोला ही था कि एक भयानक फड़फड़ाहट की आवाज़ से डर गया । खिड़की ज़रा सी खुली रह गयी थी और कबूतर ग़लती से किचन में फँस गया था । हालांकि मेरा मानना है कि उसने यह जानबूझकर किया होगा क्योंकि जिस खिड़की से मुझे यह दिखता है, मैंने कई दिनों तक उसके पर्दे लगा रखे थे । मेरे निजी जीवन में ताका-झांकी का उसका ज़रूर यह कोई नया तरीका होगा । खिड़की से निकल भागने की उसकी नाकामयाब कोशिश में संभव है उसे कुछ चोट भी लगी होगी । मेरी एक लड़की दोस्त ने बारिश में भीगे हुये और घायलकबूतर के जख्म पर

एक बहुत भावुक कविता लिखी है। यह कबूतर जैसा था, मुझे पूरा भरोसा था कि इसकी वजह से मुझे और कबूतरों से भी चिढ़ हो जाएगी। मैंने तय किया कि आज ही उस लड़की को फोन करूंगा और कबूतर के ज़ख्म पर लिखी उस कविता में निवेश की गयी पीड़ा, दर्द और सहानुभूति को किसी और पशु या पक्षी पर शिफ़्ट करने की सलाह दूंगा। मैं उसे बताऊंगा कि कालबोध और इंद्रियबोध की सजगता के साथ काव्य प्रयोजन भी उपयुक्त होना चाहिए। जीवन के लंबे और पीड़ादायक अनुभवों से अर्जित की हुई सूक्ष्म और गहन संवेदनाओं को किसी बेकार से पक्षी पर खर्च करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है !

बहरहाल मैं चाय बनाना स्थगित नहीं कर सकता था क्योंकि कबूतर को उसके हाल पर छोड़ देना या फिर उसके सही सलामत निकल जाने के लिए समय देना मुझे अपनी तौहीन सी लगी। मैंने खिड़की खोलने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाया, कबूतर ने घबराकर तेज़ छटपटाहट के साथ किचन का एक चक्कर लगाया। कुछ खाली डिब्बे और कार्टन गिराने के बाद वह फिर उसी जगह वापस बैठ गया। चाय बनाते हुये मुझे एक दफ़ा यह खयाल भी आया कि क्यों न मैं इस कबूतर का कत्ल कर दूँ तो चाय के साथ कुछ नाश्ते का इंतज़ाम भी हो जाए। मैं उसे बड़ी आसानी से पकड़ सकता था। हालांकि यह सिर्फ एक खयाल ही था, और किसी दूसरे खयाल से जुड़ा हुआ था। आप निःसंकोच और बिला शक मुझे एक अच्छा और दयालु आदमी समझ सकते हैं क्योंकि संयोग की बात है कि कबूतर के बारे में यह विचार भी मुझे एक लड़की दोस्त से ही याद आया। हुआ यूँ कि लड़की किराये पर रहने के लिए एक फ्लैट देखने गयी। सारे कमरों और बालकनी का मुआयना करने के बाद उसके मुंह से निकला "वाव ! यहाँ कबूतर भी आते हैं !" जिस दोस्त ने लड़की को कमरा दिखाया था, वह लड़की के पक्षी प्रेम की गहराई की थाह लगा पाता, इससे पहले लड़की के मुंह से निकल पड़ा "मैं कबूतर रोस्टेड भी बना सकती हूँ और ग्रेवी वाला भी।"

खिड़की खोलने के बहुत देर बाद तक भी कबूतर मनहूस शक्ल बनाए उसकी ग्रिल पर बैठा रहा। किसी कबूतर की मनहूस सूरत की कल्पना आप अपने हिसाब से कर सकते हैं। मैं इस उम्मीद से चाय बनाने में मशगूल रहा कि थोड़ी खटर-पटर के बाद यह बाहर निकल भागेगा और दुबारा इधर का रुख करने के लिए हज़ार बार सोचेगा। मैं ग़लत था क्योंकि मेरे कई बार किचन में आने जाने के बावजूद उस दिन वह देर रात तक वहीं बैठा रहा और टुकुर-टुकुर न जाने क्या देखता और सोचता रहा। मुझे भी कोई ग़रज़ नहीं थी कि उसे सही रास्ता दिखाने या फिर खिड़की से भगाने के लिए अपनी कुछ कैलोरी फालतू खर्च करता। शाम की चाय बनाते हुये भी मैंने पाया कि वह उसी जगह पर बैठा है। मोबाइल के स्क्रीन पर नज़रें गड़ाए एकाध बार मैंने उसकी तरफ लापरवाही से नज़र डाली। चाय कप में छानते हुये मुझे लगा कबूतर बोल पड़ेगा "एक ढक्कन चाय मुझे भी मिल सकती है क्या ? कम चीनी और कड़क चायपत्ती वाली ! बहुत देर से एक ही जगह पर बैठा हूँ।" मुझे पूरा यकीन था कि उसने अगर ऐसा कुछ कहा तो मैं ग़ुस्से से आगबबूला हो जाऊंगा और उबलती हुई चाय उसके ऊपर फेंक दूंगा। मैं जानता हूँ कि यह भी बहुत ही हिंसक खयाल है, लेकिन साथ में आपको यह भी मानना पड़ेगा कि इससे ज़्यादा हिंसक खयाल कबूतर को मार कर खा जाने वाला, मेरे मन में पहले आ चुका था, जिसे मैंने त्याग दिया था।

कई दिनों बाद जब मैं अपने गाँव से लौटा तो किचन का दरवाजा खोलते ही मैंने पाया कि कबूतर की ढेर सारी सूखी हुई टट्टी फर्श पर बिखरी पड़ी है। मेरे आने से एक हलचल सी हुई और रोशनदान से थोड़ी और ताज़ी टट्टी फर्श पर बिखर गयी। कुछ दिनों पहले उस रोशनदान में किचन की गंध को बाहर निकालने के लिए मैंने एक पंखा लगवाया था। पंखा जबसे लगा था तबसे उसके चलने का संयोग नहीं बना था। ऊपर चढ़कर गौर से देखा तो बाकायदा एक घोंसला बना हुआ था, दो छोटे बच्चे सो रहे थे और वही कबूतरी एक कोने में सहम कर बैठी हुई थी।

वह बेहूदा कबूतर मेरे आने की आहट से उड़कर सामने के दूसरे छज्जे पर जा बैठा था। इस बार कबूतर को देखने के बावजूद मुझे कबूतरी पर बहुत गुस्सा आया। इतना ग़ुस्सा कि मेरा हाथ पंखे की बटन पर चला गया। बस एक बार बटन दबाने की देर थी कि तिनकों और फूस से बना हुआ वह घोसला बच्चों समेत किसी भयानक बवंडर की भेंट चढ़ जाता। मैंने आपको पहले भी बताया कि मैं एक अच्छा और रहमदिल आदमी हूँ इसलिए कबूतरी के बच्चों के मासूम चेहरों का खयाल करके मैंने हाथ वापस खींच लिया। कबूतर और कबूतरी पर मेरा ग़ुस्सा वैसा ही था। कबूतर का गुनाह यह था कि उसने बहला-फुसला कर एक मासूम कबूतरी की ज़िंदगी बरबाद कर दी थी। कबूतरी पर ग़ुस्सा इसलिए आ रहा था कि उसने इस बेहूदा कबूतर को ही क्यों चुना ? थोड़ा ग़ुस्सा उनके बच्चों पर भी था क्योंकि उनकी वजह से न जाने कितने दिनों तक किचन का यह पंखा ग़लती से भी चलाने से बचना होगा। मैंने उस पंखे की बटन को लाल टेप से ढँक दिया।

एक दिन की बात है। इस बात से कोई फरक नहीं पड़ता कि वह सप्ताह का कौन सा दिन था। मैं अपनी कुर्सी पर बैठा और मेज पर सिर झुकाये कोई किताब पढ़ रहा था। मेरा मेज औसतन छोटा है, जिसपर एक कंप्यूटर, दो किताबें, एक मोबाइल और एक टेबल लैंप आ जाने के बाद एक इंच भी फालतू जगह नहीं बचती। एक पानी की बोतल और एक पेपर वेट के नीचे दबे कुछ कागजों के बाद तो आप चाय का कप भी ढंग से टिका नहीं सकते। ऐसे में मेरा क़लमदान अक्सर ठीक बगल वाली खिड़की पर रखा होता। एक पुराना गिटार, असली, लेकिन शोपीस के रूप में, खिड़की से सटाकर रखा हुआ था, जिसका ऊपरी हिस्सा कलमदान में जाकर लगता था। वास्तु के हिसाब से यह खिड़की वही जगह थी जहां से वह मनहूस ऊँघता हुआ कबूतर सामने के छज्जे पर बैठा दिखता रहता। कभी उसकी दायीं तो कभी बाईं आँख बंद होती। मैं उसे सुस्त या आलसी भी नहीं कहना चाहता क्योंकि इससे मेरी जरूरत के दो शब्दों के दुरुपयोग के अलावा और कोई फायदा नहीं होने वाला। अब जबकि चिट्ठियाँ पहुंचाने जैसा अवैतनिक और एकमात्र काम भी कबूतरों से छिन चुका है, तो ऐसा कौन सा पाठ्यक्रम शेष बचा है, जिसके लिए वे बहुत सजग और चौकन्ने दिखें। यहाँ अगर आप ध्यान दें तो मैंने बातों बातों में उस कबूतर के हक की बात भी कह दी। इससे आपको यह भी पता चल सकेगा कि मनुष्येतर जीव-जंतुओं के प्रति मेरे सामाजिक सरोकार और प्रतिबद्धताएं शून्य नहीं हैं और निगेटिव तो कतई नहीं। मेरी नज़र अक्सर और अनायास उस सुस्त कबूतर की तरफ चली जाती।

मेरी थोड़ी देर की अनुपस्थित में कबूतर सरक कर खिड़की पर आया और गिटार के तार पर बैठ गया। क्षण भर में मैंने यह तय कर लिया कि मैं ज़िंदगी में कुछ कर पाऊँगा या नहीं, उस कबूतर से दोस्ती तो कतई नहीं करूंगा। मेरी आहट पर कबूतर के पैरों की हड़बड़ाहट से गिटार के तारों में किसी कॉर्ड की बेसुरी सी धुन उभरी। फोन पर बातें करते हुये मैं वापस अपने स्टडी रूम में पहुंचा तो कबूतर बिना किसी डर के तारों पर बैठा हुआ था। मेरे पास दो रास्ते थे। कबूतर को गिटार के तार पर बैठे हुये अद्भुत दृश्य को कैमरे में कैद कर लेता और लाइक, कमेंट्स या एकाध दर्जन इमोजी के लालच में फेसबुक पर डाल देता। दूसरा रास्ता था कि मैं अपना फोन खींच कर कबूतर को के सिर पर दे मारता, क्योंकि उसने अतिरिक्त अपनापे और अत्यंत आत्मविश्वास के साथ अपने शरीर को एक बार ऐंठ कर झकझोरा और गिटार के तार पर टट्टी कर दी। खुद पर काबू पाते हुये मैंने तीसरा रास्ता चुना और फोन के दूसरे छोर पर उपस्थित व्यक्ति को बहुत विस्तार से बताया कि मैं एक कबूतर से कितनी नफरत कर सकता हूँ। मैं प्राइमरी की सारी हिन्दी किताबों में 'क से कबूतर' की जगह 'क से कुछ भी' लिखवाने की ज़िद पर अड़ा रहा, जब वह व्यक्ति बहुत गंभीरता से कबूतरों के प्यारे और सुंदर होने की दलीलें दे रहा था। मैंने कहना जारी रखा कि यह कितनी खराब बात होगी कि भाषा की दहलीज़ पर अपने खुरदुरे पंख फड़फड़ाता बेकार सा एक पक्षी ज्ञान की पूरी प्रक्रिया को

बाधित किए हुआ बैठा है और किताब के पहले ही पृष्ठ पर मजे से टट्टी कर रहा है।

इस दौरान कबूतर उसी बेफिक्री से गिटार के तार पर बैठा रहा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। यह मेरे बर्दाश्त के बाहर था और मैं थोड़ी दूर से ही कोई ऐसी चीज़ ढूंढ रहा था जिसे कबूतर पर फेंक कर उसका कुछ नुकसान कर सकूँ। बाल खुजलाने के क्रम में मुझे महसूस हुआ कि मेरे कान पर एक लाल कलम टिकी हुई है, जिससे कुछ देर पहले मैंने इतिहास का कोई महत्वपूर्ण तथ्य 'अंडरलाइन' किया था। मैंने अपनी नफरत को छुपाते हुये बहुत चालाकी से कलम को दो उँगलियों के बीच बिलकुल मिसाइल की तरह साधा और झटके से कबूतर की तरफ उछाल दिया। कलम, कबूतर की पीठ पर जाकर लगी और लुढ़क कर खिड़की को पार करते हुये निचली खिड़की के छज्जे पर जा अटकी। कबूतर हड़बड़ाकर गिरते-सम्हलते खिड़की से बाहर भागा और सामने वाले छज्जे पर जाकर बैठ गया। कबूतर को अपने इस अपमान की कोई खास वजह नहीं समझ में नहीं आ रही थी और मुझे यह नहीं समझ आ रहा था कि ऐसी अड़बड़ जगह पर जाकर गिरी कलम को वापस कैसे पाया जा सकता था।

उस दिन कबूतर घंटों छज्जे पर बैठने के बाद उड़ गया। उड़ने की उसकी दो कोशिशों से मुझे महसूस हुआ कि उसको थोड़ी बहुत चोट ज़रूर लगी है। मुझे वैसे तो खुश होना चाहिए था, लेकिन क्यों नहीं हुआ, इस बात की पड़ताल करना भी मैंने गैरज़रूरी समझा। बहुत दिनों तक दुबारा वह कबूतर नज़र नहीं आया। इधर कबूतरी के दोनों बच्चे बड़े हो रहे थे। उनकी चीं-चीं कुछ ही दिनों में गुटरगूं में तब्दील होने लगी थी। उनके मजबूत होते जाते पंखों का पता उनकी फड़फड़ाहट और किचन में लगातार झरते तिनकों से चलता था। इस बीच मेरा ध्यान कबूतरी पर गया, जो गुमसुम रहने लगी थी। उसकी उदासी, अपनी आँखों के सामने बच्चों को बड़े होते देखनी की खुशी से थोड़ी ज़्यादा भारी थी। अब मुझे थोड़ी सी चिढ़ कबूतरी की उदासी से भी होने लगी। किचन की खिड़की से बिल्डिंग के बीच में अटकी लाल कलम अक्सर दिख जाती तो मुझे कबूतर की याद आ जाती। कबूतरी के बच्चे जिस दिन बड़े होकर उड़ चले, उसदिन मैंने बटन से टेप हटाकर पंखा चलाया और किचन से एक मटमैली खुशबू तेज़ बवंडर के साथ बाहर निकल गयी।

इस बात को काफी दिन हो गए। एक दिन मैं किचन में चाय बनाते हुये उस छज्जे को देख रहा था जहां कबूतर बैठा करता था। कई और कबूतर वहाँ आते जाते, उनकी बैठकें होतीं लेकिन वैसा सुस्त और बेहूदा कबूतर उनमें से कोई नहीं था। ये अजीब बात है कि मुझे उसके न होने से भी एक चिढ़ होने लगी थी। मैंने ऊब में कोई निरर्थक सा शब्द बुदबुदाते हुये अपने आप को समेटा ही था कि मेरी नज़र उस जगह पर पड़ी जहां लाल कलम अटकी होनी चाहिए थी, लेकिन वह वहाँ नहीं थी। हवा या बारिश से कलम के नीचे गिर कर खो जाने का अनुमान लगाते हुये चाय लेकर मैं वापस अपने स्टडी टेबल पर पहुंचा। बचे हुये उदास दिन के शेष कार्यक्रमों को उँगलियों पर गिनते हुये मैंने डायरी पर एक निगाह डाली और चाय सुड़कने लगा। कुछ देर बाद मेरी एक लापरवाह नज़र खिड़की पर गयी तो मैंने पाया कि वही लाल कलम खिड़की पर रखी हुई है और वही कबूतर सामने के छज्जे पर बैठा मुझे देख रहा है। उसने अपने अपमान के बावजूद मुझे कलम वापस करने की ज़हमत क्यों उठाई ! मेरे कुछ समझने के पहले वह फिर वापस न आने के लिए उड़ान भरचुका था। मैंने कलम उठाकर डायरी के आखिरी पन्ने पर ज़ोर से घसीटा तो लाल कलम से लाल लहू की कुछ बूंदें बह निकलीं।

कबूतर-कबूतरी के एक नये जोड़े ने फिर उसी जगह दो बच्चे दिये। पंखे वाली बटन पर टेप चिपकाने के बाद कबूतरी के घोसले में एक मुट्ठी अनाज डालते हुये मुझे महसूस हुआ कि पिछले दिनों गुस्से में कबूतर को क़त्ल कर देने का खयाल वाकई हिंसक था। डायरी के आखिरी पन्ने को मैंने गौर से देखा। वहाँ लिखा था 'क से कबूतर।' रचना